ओम्शान्ति । रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं । यह तो बच्चे समझते हैं रूहानी बच्चे माना आत्माएं । रूहानी बाप माना आत्माओं का बाप । इसको कहा जाता है आत्माओं और परमात्मा का मिलन। यह मिलन होता ही है एक बार। यह सब बातें तुम जानते हो। जैसे बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो पढ़ने वाले और टीचर के सिवाए समझ न सके। यह फिर है विचित्र बात। विचित्र बाप विचित्र आत्माओं को समझाते हैं। वास्तव में आत्मा विचित्र है। यहाँ आये चित्र बनती है। चित्र से पार्ट बजाती है। आत्मा तो सब में है ना। जनावरों में भी आत्मा तो है ना। 84 लाख कहते हैं, उसमें तो सब जनावर आ जाते हैं। ढेर जनावर आदि हैं। बाप समझाते हैं इन बातों में जाना टाईम वेस्ट करना है। सिवाय इस ज्ञान के मनुष्यों का टाईम वेस्ट ही होता है। इस समय बाप बैठ तुम आत्माओं को पढ़ाते पढ़ाते हैं। फिर आधा कल्प तुम प्रालब्ध भोगते हो। वहाँ तुमको कोई तकलीफ न ही होती। तुम्हारा टाईम वेस्ट होता ही है दुःख सहन करने में। यहाँ तो दुःख ही दुःख है। इसलिए सभी बाप को याद करते हैं। कि हमारा दुःख में टाईम वेस्ट होता है इन से निकालो। सुख में कब टाईम वेस्ट नहीं कहेंगे। यह भी तुम समझते हो। इस समय मनुष्य का कोई वैल्यु नहीं है। मनुष्य देखो अचानक ही मरते कैसे हैं। एक ही तूफान में कितने मर जाते हैं। रावण राज्य में मनुष्य की कोई वैल्यु नहीं रहती। अब बाप तुम्हारा कितनी वैल्यु बनाते हैं। वर्थ नाट अ पेनी से फिर वर्थ पाउन्ड बनाते हैं। गाया भी जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक... इस समय मनुष्य कोड़ियों पिछाड़ी लगे हुये हैं। क्या कमाते हैं, कर के लखपति, करोड़पति, पदमपति बनते हैं। उन्हों की सारी बुधि उसमें ही रहती है। उनको कहते हैं यह सब मूल बाप को याद करो। मानेंगे नहीं। बुधि बैठेगा उनको जिनको कल्प पहले भी बैठा होगा। नहीं तो कितना भी समझाओ कभी बुधि में बैठेगा नहीं। तुम भी नम्बरवार जानते हो कि यह दुनिया बदल रही है। बाहर में भी तुम यह लिख दो कि दुनिया बदल रही है। फिर भी समझेंगे नहीं। जब तक तुम किसको समझाओ। अच्छा कोई सन्यासी आये फिर उनको समझाना पड़े बाप को याद करो। सतोप्रधान बनो। नालेज तो बहुत सहज है। यह सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य वंशी, शूद्रवंशी। अभी दुनिया बदल रही है। बदलने वाला एक ही बाप है। यह भी तुम यर्थात रीति जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, माया पुरुषार्थ करने नहीं देती। फिर समझते हैं ड्रामा अनुसार ही इतना पुरुषार्थ नहीं चलता है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम श्रीमत से अपने लिए इस दुनिया को बदलाये रहे हैं। श्रीमत है ही शिव बाबा की। शिव बाबा, शिव बाबा कहना तो बहुत सहज है। और कोई न शिव बाबा को, न वर्सा को जानते हैं। बाबा माना ही वर्सा। बाबा भी सच्चा चाहिए ना। आजकल तो म्युनिसपैलिटी के बड़े को भी बाबा कह देते हैं। गांधी को भी भारत का फादर कहते थे। वास्तव में यह भी तो रांग है ना। या कोई जगदगुरु कहते हैं, अब जगत माना सारी सृष्टि के गुरु वह कैसे कोई मनुष्य हो कैसे सकता है। जब कि पतितपावन सर्व का सदगति दाता एक ही बाप है। बाप तो है निराकार। फिर कैसे सियेट करते हैं, दुनिया बदलती है। जब एन्ड में आवेंगे तब तो पता पड़ेगा ना। ऐसे नहीं कि प्रलय हो जाती है। फिर बाप नये सिरे रचते हैं। शास्त्रों में दिखाया है एक बड़ी प्रलय होती है, दूसरी छोटी प्रलय होती है। फिर पिपर के पत्ते पर कृष्ण आता है। परन्तु बाप समझाते हैं ऐसे तो है नहीं। गाया भी जाता है वर्ल्ड रिपीट। तो प्रलय हो न सके। तुम्हारी दिल में है अभी यह पुरानी दुनिया बदल रही है। ऐसे ऐसे तो नहीं कहेंगे नई दुनिया बदल पुरानी हो रही है। नहीं। पुरानी दुनिया बदल नई हो रही है। यह सब बातें बाप ही समझाते हैं। यह ब्र(ल0ना0) है नई दुनिया के मालिक। तुम चित्रों में भी दिखाते हो पुरानी दुनिया का मालिक है रावण। रामराज्य और राम राज्य कहा जाता है। यह बातें तुम्हारी बुधि में है। बाबा यह पुरानी दुनिया बदलाये रहे हैं। आसुरी दुनिया खतम हो अब दैवी दुनिया की स्थापना हो रही है। बाप कहते हैं मैं जो हूं जैसा हूं कोई विरला ही समझते हैं। कैसे दुनिया बदल रही है वह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ

अनुसार जानते हो। जो अच्छी रीत पुरुषार्थ करते हैं उनको बड़ा अच्छा नशा रहता है। याद की पुरुषार्थ को रियल नशा चढ़ेगा।84 के चक्र का नालेज समझाने में इतना नशा नहीं चढ़ता है जितना बाप की याद की यात्रा में नशा चढ़ता है।मुल बात है भी पावन बनने की।पुकारते भी है आकर पतित से पावन बनाओं। ऐसेनहीं कहते हैं आकर विश्व की बादशाही दो।भक्ति मार्ग में कितने कथाएं सुनते हैं।सच्ची2 सत्य नारायण की कथा तो यह है।वह कथाएं जन्म-जन्मान्तर सुनते2 नीचे ही उतरते आये हैं।भारत में ही यह कथाएं सुनने का रिवाज़ है।और कोइ खन्डों में कथाएं सुनने का रिवाज़ नहीं है।भारत को ही रिलेजोयस मानते हैं।ढेर के ढेर मंदिर हैं भारत में।क्रिश्चनस को तो एक ही क्राईस्ट की चर्च होंगी।यहां तो ढेर मंदिर हैं। रियल मंदिर तो वास्तव में एक ही शिव का होना चाहिए।नाम भी एक होना चाहिए।यहां तो ढेर नाम हैं।विलायत वाले भी आते है मंदिर देखने।विचारों को यह पता नहीं है कि भारत का प्राचीन क्या था। 5000वर्ष से पुरानी चीज़ तो कोई है नहीं।वह तो समझते हैं लाखों वर्ष की पुरानी चीज़ मिले।बाप समझाते यह मंदिर आद बने होंगे, चित्र बने होंगे, इसको 2500 वर्ष हुये होंगे।पहले2 शिव की ही पूजा होती है। वह है अव्यभिचारी पूजा, वैसे ही अव्यभिचारी ज्ञान भी कहा जाता है।पहले होती है अव्यभिचारीपूजा, फिर होती है व्यभिचारी पूजा।उस में ज्ञान की कोई बात नहीं।पहले एक शिव की पूजा करते हैं।फिर होती हैं देवताओं की।अब तो देखो पानी की मिटी को सब की पूजा होती है।अब वेहद का बाप कहते हैं तुम ने भक्ति मार्ग कितना धन गंवाया है।कितनी अथाह शास्त्र हैं।अथाह चित्र हैं।गीताएं कितनी ढेर के ढेर होंगी। इन सब पर खर्चा करते/2, सन्यासियों को देते2 माथा टकते तुम क्या हो गये हो।कल तुम कोइ बल सिरताज बनाया था, फिर तुम कितने कंगाल बन गये हो।कल की बात है ना।कल तुमको राज्य दिया था।तुम भी समझते हो बरोबर हम ने 84 का चक्र ऐसे लगाया है।84 जन्म और 84 लाख में देखो कितना फर्क है।कितना बड़ा गपोड़ा है।अब तुम जानते हो हम फिर से यह(देवता) बन रहे हैं।बाबा से वर्सा ले रहे हैं।बाबा घड़ी2 ताकिद करते हैं, गीता में भी यह अक्षर है मनमनाभव।कोई2 अक्षर ठीक है।बाकि तो हैं गपोड़े।प्रायः कहा जाता है ना याने देवी देवता धर्म है नहीं बाकि चित्र है। अब देवी देवता धर्म का शास्त्र भी जरूर चाहिए।चित्रों की ख्यालात से ही गीता आद बनाई है।यह भी ड्रामा में नुंध है।फिर भी यही सामग्री बनेगी। सतयुग में यह कुछ भी नहीं होता।तुम्हारा यादगार देखो कैसा बना है।तुम समझते हो अभी स्थापन कर रहे हैं।फिर भक्ति मार्ग में हमारी ही यादगार एक्युरेट बनेंगी।अर्थक्वेक आद होती है उस में सब खतम हो जाता है।वहां तुम सब कुछ नया बनावेंगे।हुनर तो वहां रहता ना।हीरे काटने का भी हुनर है। यहां भी हीरों को काटते हैं फिर बनाते हैं।पहले पत्थर तुम देखो तो बिलकुल समझ न सको।इस में बड़ी एक्सपर्ट होते हैं।वह फिर वहां जावेंगे।वहां यह सब हुनर जावेगा।तुम समझते हो कितना सुख होगा। इनका(ल० ना०)राज्य था।नाम ही है स्वर्ग।100% सालवेन्ट।अब तो है इनसालेवेन्ट।भारत में जवाहरात की बहुत फैशन है।जो परम परा चला आता है।तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए।तुम जानते हो यह दुनिया बदल रही है।अब स्वर्ग बन रहा है।इसके लिए हमको पवित्र जरूर बनना पड़े।देवी गण भी धारण करनी हैं। इसलिए बाबा कहते हैं चार्ट रखो।हम आत्मा ने कोइ आसुरी एक्ट तो नहीं किया। अपने को आत्मा पक्का समझो।शरीर द्वारा कोइ विकर्म तो नहीं किया।अगर किया तो रजिस्टर खराब हो जावेगा। यह है 21 जन्मों की लाटरी।यह भी रेस है। जैसे घोड़े दौड़ होती है ना।इसको कहते हैं राजस्व अश्व मेघ....स्वराज्य के लिए अश्व यानि तुम आत्माओं की दौड़ी पहननी है। अब वापस घर जाना है। इसको स्वीट सायलेस होम कहा जाता है।यह अक्षर अभी तुम सुनते हो।अब बाप कहते हैं बच्चे खुब मेहनत करो।राजाई मिलती है कम बात थोड़े ही है।मैं आत्मा हूं। इतने जन्म लिये हैं, अब बाप कहते

है तुम्हारी 84 जन्म पूरे हुये हैं। अब फिर पहले नम्बर से शुरू करना है। नये महलों में जरूर बच्चे ही बैठेंगे। ऐसे तो नहीं खुद पुराने में बैठे और नये में किराये वालों को बैठावेंगे। तुम जितनी मेहनत करेंगे नई दुनिया के मालिक बनेंगे। नया मकान बनता है तो फिर दिल होती है पुरानी को छोड़ नये में बैठें। बाप बच्चों के लिए नया मकान बनाते ही तब हैं जब पहला मकान पुराना होता है। यहाँ किराया पर देने की तो बात ही नहीं। जैसे वह लोग मून आद में प्लाट लेने की कोशिश करते रहते हैं। तुम फिर स्वर्ग में प्लाट ले रहे हो। जितना2 ज्ञान और योग में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे। यह है राजयोग। कितनी बड़ी राजाई मिलेंगी। बाकि यह जो मून आद में प्लाट ढूंढते हैं वह सब है अति मूर्खता। यही चीजें जो सुख देने वाली हैं वही फिर विनाश करने, दुःख देने वाले बन जावेंगे। आगे चल करके लश्कर आद भी कम हो जावेंगी। बम से पटाखा का काम होता जावेगा। अभी तो उन्हों को काम में नहीं लगावे तो खिलाना भी पड़े ना। यह ड्रामा बना हुआ है। समय पर अचानक विनाश हो जाता है। फिर सिपाही आद भी मर जाते हैं। मजा है देखने का। तुम अब फरिश्ते बन रहे हो। तुम जानते हो हमारी खातिर विनाश होना ही है। ड्रामा में पार्ट है। पुरानी दुनिया खलास हो जाती है। जो जैसा कर्म करते हैं वैसा जन्म तो लेते हैं ना। अब समझो सन्यासि अच्छे हैं, जन्म तो फिर भी गृहस्थियों पास लेंगे ना। श्रेष्ठ जन्म तो तुमको नई दुनिया में मिलना है। फिर भी संस्कारों अनुसार जाये वह बनेंगे। तुम अभी संस्कार ले जाते हो नई दुनिया के लिए। जन्म जरूर भारत में ही लेंगे। जो बहुत अच्छे रिलीजियस माईन्डेड होंगे उन पास जन्म लेंगे। क्योंकि तुम कर्म ही ऐसे करते हो। जैसा2 संस्कार उस अनुसार ही जन्म होता है। तुम बहुत ऊँच कुल में जाये जन्म लेंगे। तुम्हारे जैसा अच्छा कर्म करने वाला कोई तो होगा नहीं। जैसी पढ़ाई, जैसी सर्विस वैसा जन्म। मरना तो बहुतों को है ना। पहले रिसिव करने लिए भी जाना है। बाप समझाते हैं अब यह दुनिया बदल रही है। जो समझते हैं उन्हों को जास्ती कभी मैं नहीं जाना चाहिए। बाप ने तो सा0 कराया है। बाप अपना भी मिसाल बताते हैं। देखा 21 जन्मों लिए राजाई मिलती है इसके आगे यह 10-20 लाख क्या है। जप. को मिले बादशाही। बैल को मिले गधाई। भागीदार को गधाई दे दो। तुम 21 जन्म लिए राजाई ले लो। भागीदार को कह दिया जो चाहिए सो ले लो। बोला यह यह चाहिए। पता नहीं नुकसान पड़े तो। अच्छा एक वर्ष का नफा भी ले लो। झट लिखा पढ़ी कर ली। कोई भी नुकसान न हुई। बच्चों को भी समझाया जाता है बाबा से तुम क्या लेते हो। स्वर्ग की बादशाही। जितना हो सके सेन्टर खोलते जाओ। बहुतों का कल्याण करो। तुम्हारी 21 जन्मों की कमाई हो रही है। यहाँ तो लखपति, करोड़पति बहुत हैं वह सब हैं बेगरस। तुम्हारे पास आवेंगे भी बहुत। प्रदर्शनी में कितने आते हैं। ऐसे मत समझो प्रजा नहीं बनती है। बहुत प्रजा बनती है। अच्छा2 तो बहुत कहते हैं। परन्तु कहते हमको फुर्सत नहीं। थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जावेगा। अविनाशी ज्ञान का विनाश होता नहीं। बाप का परिचय देना कम बात थोड़े ही है। कोई2 के रोमांच खड़ी हो जावेंगी। थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जावेगा। अगर ऊँच बनना होगा तो पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। फिर ट्रुस्टी हो जावेंगे। बाप कोई से धन आद तो लेंगे नहीं। मकान लेवें मिठी में मिल जावे तो फिर मुझे रिटर्न में वहाँ देना पड़े। मैं सौदागर भी पक्का हूँ। बच्चों को पूरी2 तालाब होना है ना। कोई2 तो एक रुपया भी भेज देते हैं बाबा एक ईंट लगाये दो। सुदामा का चावल मुट्ठी का गायन है ना। बाप कहते हैं तुम्हारे यह हीरे जवाहर हैं। हीरे जैसा जन्म तो सभी का बनता है ना। तुम भविष्य के लिए कमाये रहे हो। तुम जानते हो यहाँ इन आँखों से जो कुछ देखते हैं यह पुरानी दुनिया, यह बदल रही है। अल्लाउदीन का भी खेल है ना। परन्तु अर्थ समझते थोड़े ही हैं। तुम जानते हो बाबा वह स्थापन कर रहे हैं। वहाँ तो अथाह सुख ही सुख मिलेगा। यहाँ है अथाह दुःख। यहाँ बिमारियाँ कितनी हैं। तुम अभी पुरी के मालिक बन रहे हो। मोह जीत जरूर बनना पड़े। अच्छे बच्चों को गुडमार्निंग। ओम।